भारतीय राजनीति में धर्म का प्रभाव

मेघा अग्रवाल
एम० ए०, एम० फिल० (इतिहास)
ईमेल: meghaagarwal816@gmail.com

सारांश

भारतीय मानस आदिकाल से ही धर्म से प्रेरित रहा है। धर्म शव्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के धृ धातु से हुई है जिसका अर्थ है – धारण करना, बनाये रखना, और पुष्ट करना। सभी जीवो के प्रति मन में दया भाव को ही धर्म कहा गया है। एडवर्ड टायलर ने कहा है कि **'' धर्म आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है''** ।

मूल बिन्दु

राजनीति, धर्म, आस्था।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 26.08.2021
Approved: 15.09.2021

मेघा अग्रवाल

भारतीय राजनीति में धर्म का प्रभाव

RJPP 2021,
Vol. XIX, No. II,

pp.322-326
Article No. 42

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2021-vol-xix-no-1

जब तक राजाओं, सामन्तों और धर्म गुरुओं के प्रभुत्व का काल रहा, तब तक लगभग सारे संसार में राजनीति पर धर्म का ऐसा ही सुदृढ़ अधिकार रहा। तत्पश्चात जब प्रजातंत्र की लहर ने जोर पकड़ा, एक–एक करके राजशक्तियाँ समाप्त होती गयीं और शासन की सत्ता प्रजा के हाथो में आती गयी, तब धर्म का प्रभाव क्षीण होता गया। राजनीति से तो इसका पूर्णतया बहिष्कार–सा हो गया और यह माना जाने लगा कि धर्म व्यक्ति की निजी वस्तु है। जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है, भारत भी धर्म के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। यहाँ की राजनीति में धर्म का बोलबाला सदैव से रहा है। अंग्रेजी शासन काल में हिन्दुओं और मुसलमानों को फूट डालकर अलग–अलग कर दिया गया, जिससे हिन्दू और मुसलमान मिलकर न रह सकें, देश का बँटवारा भी इसी धर्म को लेकर किया गया।

प्राचीन समय से ''धर्म और राजनीति'' अथवा ''राजनीति और धर्म'' में गहरा संबंध रहा है जब–जब धर्म व राजनीति का नकारात्मक मिलन हुआ है तब तक राजनीति ने धर्म का दुरुपयोग किया है। धर्म के नाम पर शुद्ध राजनीति करने से विश्व में हमेशा खून खराबा हुआ है जो आज भी जारी है। वस्तुतः धर्म और राजनीति में सदैव मर्यादित संपर्क बना रहना चाहिए ताकि दोनों एक दूसरे का परस्पर सकारात्मक सहयोग कर सकें।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि भारतीय राजनीति में धर्म का गहरा प्रभाव रहा है तथा आज भी यहां की राजनीति को प्रभावित करने वाले कारकों में धर्म एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके लिए सरकारी उदासीनता तथा वोट की राजनीति सबसे अधिक जिम्मेवार है।

भारतीय मानस आदिकाल से ही धर्म से प्रेरित रहा है। धर्म शव्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के धृ धातु से हुई है जिसका अर्थ है – धारण करना, बनाये रखना, और पुष्ट करना। सभी जीवो के çfr eu ean; kHko dkghekeZ dgkx; kgS, MbMZVk; y j usd gkgSd **''धर्म आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है''** ।.स्वामी विवेकानंद के अनुसार धर्म वह है जो मानव को इस संसार और परलोक में आनंद की खोज के लिए प्रेरित करता है। धर्म कार्य पर प्रस्थापित है। धर्म मानव को रात दिन इस आनंद को प्राप्त करने के लिए कार्य करवाता है। हॉवेल के अनुसार धर्म अलौकिक शक्ति में विश्वास पर आधारित है जिसमे आत्मवाद और मानववाद दोनों सम्मिलित है। मैलिनोवस्की के अनुसार धर्म क्रिया का एक ढंग और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी, और धर्म एक समाजशास्त्रीय घटना के साथ–साथ एक व्यक्तिगत अनुभव भी है। धार्मिक क्रिया के रूप में प्रार्थना का स्थान लगभग प्रत्येक धर्म में ही सदा से महत्वपूर्ण रहा है। सभ्यता के उच्च स्तर पर प्रार्थना धार्मिक क्रिया का प्रधान अंग बन जाती है। प्रार्थना अलौकिक शक्ति को प्रसन्न करके उसकी कृपा दृष्टि प्राप्त करने, उसके कोपों से बचने, भौतिक सुख, समृद्धि या सफलता को प्राप्त करने के लिए की जाती है। अलौकिक शक्ति का चिंतन करना, प्राणायाम करना, समाधी लगाना, योग साधना सभी को धार्मिक क्रियाओं की संज्ञा दी जा सकती है। भारत का धार्मिक इतिहास इन धार्मिक क्रियाओं के उदाहरण से भरा पड़ा है।

प्रायः हम देखते है कि मंदिरों, मस्जिदों या गिरिजाघरों में अनेक व्यक्ति सामूहिक रूप से पूजा पाठ, कीर्तन, प्रार्थना, आराधना आदि करते है। बहुत दिनों तक सामूहिक धार्मिक क्रिया को बार–बार दोहराया जाता है तो यह एक धर्म विशेष का अंग बन जाती है। प्रायः धर्म उन प्रत्येक क्रियाओ को अनुचित ठहराता है जो समाज तथा ईश्वर के विरुद्ध होती है। कोई भी धर्म चोरी करने, झूठ बोलने, लालच करने, नास्तिक बनने आदि को पुण्य कार्यो के अंतर्गत सम्मिलित नहीं करता, सदाचार,

ईमानदारी, निष्कपट, आचरण आदि पर अत्यधिक बल देता है। धर्म में धारण करने की शक्ति अन्तर्निहित मानी गयी है। इसी कारण कुछ शताब्दियों पूर्व तक न केवल भारत में, अपितु समस्त विश्व में धर्म का बहुत महत्व रहा।

जब तक राजाओं, सामन्तों और धर्म गुरुओं के प्रभुत्व का काल रहा, तब तक लगभग सारे संसार में राजनीति पर धर्म का ऐसा ही सुदृढ़ अधिकार रहा। तत्पश्चात जब प्रजातंत्र की लहर ने जोर पकड़ा, एक–एक करके राजशक्तियाँ समाप्त होती गयीं और शासन की सत्ता प्रजा के हाथो में आती गयी, तब धर्म का प्रभाव क्षीण होता गया। राजनीति से तो इसका पूर्णतया बहिष्कार–सा हो गया और यह माना जाने लगा कि धर्म व्यक्ति की निजी वस्तु है। जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है, भारत भी धर्म के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। यहाँ की राजनीति में धर्म का बोलबाला सदैव से रहा है। अंग्रेजी शासन काल में हिन्दुओं और मुसलमानों को फूट डालकर अलग–अलग कर दिया गया, जिससे हिन्दू और मुसलमान मिलकर न रह सकें, देश का बँटवारा भी इसी धर्म को लेकर किया गया।

भारत में राजनीति दलों का निर्माण धर्म के आधार पर हुआ है। मुस्लिम लीग, शिरोमणि अकाली दल, रामराज्य परिषद्, हिन्दू महासभा आदि के निर्माण में धर्म की प्रभावशाली भूमिका रही है। ये दल धर्म को राजनीति में प्रधानता देते है। धर्म या सम्प्रदाय के नाम पर ये अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं, वोट माँगते हैं। चुनावों में गौ–वध निषेध या मंदिर–मस्जिद जैसे मुद्दों को उछाल कर जनता की भावनाओं को उकसाते हैं।

भारत में चुनावों में धर्म और पंथ या सम्प्रदाय को आधार–मानकर प्रचार किया जाता है। धर्म के अधिकारियों– इमामों, पादरियों, साधु–संतो, मठाधीशों आदि का आश्रय वोट माँगने के लिए लिया जाता है। उनसे मतदाताओं के नाम अपीलें निकलवायी जाती हैं। मतदाताओं को भी धर्म के आधार पर बाँटने का प्रयास किया जाता है। मार्च 1977 और जनवरी 1980 के चुनावों के दौरान दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने चुनाव सभाओं में भाषण दिए और मुस्लिम मतदाताओं को किसी विशेष दल के पक्ष में मतदान के लिए प्रेरित किया। एक संवाददाता ने **दिनमान** 16–22 दिसम्बर, 1979 में लिखा कि, ''सवाल उठता है कि समाजवाद और गणतंत्र की बात करने वाले अगर इमाम के नाम से वोट पाना चाहेंगे तो हो सकता है कि बलराज मधोक जैसे लोग शंकराचार्य के नाम पर वोट माँगने लगें। फिर क्या इस देश को इमाम और शंकराचार्य के बीच चुनाव करना पड़ेगा।''

धर्म का भारतीय राजनीति में इतना प्रभाव है कि जब भी केंद्र या राज्यों में मंत्रिमंडल का गठन होता है तो उसमें सभी धर्मों और सम्प्रदायों के सदस्यों को स्थान दिया जाता है। भारत में धर्म के नाम पर अनेक बार खून बहा है। देश का बँटवारा भी धर्म के नाम पर हुआ। वर्तमान में कभी भी धर्म के नाम पर देश में दंगे और तनाव होते रहते है जिससे देश की राष्ट्रीय एकता पर खतरा रहता है। उदाहरण स्वरुप पंजाब और केरल ऐसे राज्य हैं जिनमें धर्म का प्रभाव राजनीति पर देखा जा सकता है। इस प्रकार भारत में धर्म का राजनीति पर बहुत प्रभाव रहा है और वर्तमान में भी यह देखा जा सकता है। सरकारी उदासीनता और वोट की राजनीति भी इसके लिए उत्तरदायी है। सरकारी नीति सम्प्रदायवाद को समाप्त करने के लिए कुछ कार्य करने के पक्ष में नहीं हैं। इसलिए भारत में सम्प्रदायवाद का बोलबाला हो रहा है। सभी राजनितिक पार्टियाँ धर्म के नाम पर अपने प्रत्याशियों को खड़ा करती हैं और धर्म के नाम पर वोट माँगती हैं।

प्राचीन समय से ''धर्म और राजनीति'' अथवा ''राजनीति और धर्म'' में गहरा संबंध रहा है जब–जब धर्म व राजनीति का नकारात्मक मिलन हुआ है तब तक राजनीति ने धर्म का दुरुपयोग किया है। धर्म के नाम पर शुद्ध राजनीति करने से विश्व में हमेशा खून खराबा हुआ है जो आज भी जारी है। आज भी सभी धर्मों में धर्मांध कट्टरपंथी मरने मारने को तैयार है। प्रारंभ में धर्म, शासन के लिए सुव्यवस्था और सुनीति का संस्थापक बना लेकिन बाद में अनेक शासकों ने धर्म विशेष को अपना राजधर्म घोषित किया और अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने के लिए धर्म की आड़ में युद्ध की है। इस्लाम, ईसाई, यहूदी और हिंदू धर्म से पृथक हुए कुछ वर्गों ने शक्ति की आड़ में अपनी मान्यता वह अपने धर्म के विस्तार का कार्य किया। धर्म की आड़ में साम्राज्य का विस्तार किया गया और अनेक देशों में परस्पर युद्ध हुए। विगत लगभग 2000 वर्ष का इतिहास धर्म के नाम पर अनेक बार रक्तरंजित हुआ। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में धर्म आधारित युद्धों पर कुछ हद तक विराम अवश्य लगा किंतु धार्मिक श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए धर्म की आड़ में आतंकी गतिविधियों की बाढ़ आ गई है। आतंकवादियों ने दूसरे धर्म अनुयायियों को अकारण शिकार बनाना आरंभ कर दिया भारत इसका सबसे बड़ा शिकार है।

राम मनोहर लोहिया के अनुसार ''धर्म और राजनीति के दायरे अलग–अलग हैं परंतु दोनों की जड़ें एक ही धर्म दीर्घकालीन राजनीति में जब की राजनीति अल्पकालीन धर्म है। धर्म का काम भलाई करना और उसकी स्तुति करना है जबकि राजनीति का कार्य बुराई से लड़ना और बुराई की निंदा करना है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब राजनीति बुराई से लड़ने के स्थान पर केवल निंदा करती है, तो वह कलही हो जाती है, इसलिए आवश्यक नहीं कि धर्म और राजनीति के मूल तत्व को समझा जाए। धर्म और राजनीति का विवेकपूर्ण मिलन मालवीय कल्याण में साधक होता है, जबकि इन दोनों का अविवेकपूर्ण मिलन दोनों को भ्रष्ट कर देता है, जो मानवता के लिए अनिष्टकारी होता है। इस अविवेकपूर्ण मिलन से सांप्रदायिक कट्टरता उत्पन्न होती है। धर्म और राजनीति को पृथक करने का सबसे बड़ा उद्देश्य यही है कि दोनों अपने–अपने मर्यादित क्षेत्र में सक्रिय रहे किंतु दोनों एक दूसरे का अपने ही निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए दुरुपयोग ना करें।

वस्तुतः धर्म और राजनीति में सदैव मर्यादित संपर्क बना रहना चाहिए ताकि दोनों एक दूसरे का परस्पर सकारात्मक सहयोग कर सकें। नीतिगत धर्म पर धर्मप्रद राजनीति का अनुगमन विश्व शांति की स्थापना के लिए अपरिहार्य है। राजनीति का धर्म को और धर्म का राजनीति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करना मानवता के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है इससे धार्मिक प्रतिक्रियावाद, कट्टरपंथ, सांप्रदायिकता व गुलामी की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, जो स्वतंत्रता और समानता जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को प्रभावित करती हैं इसलिए आज विश्व में अधिकांश लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को अपनाया गया है।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि भारतीय राजनीति में धर्म का गहरा प्रभाव रहा है तथा आज भी यहां की राजनीति को प्रभावित करने वाले कारकों में धर्म एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके लिए सरकारी उदासीनता तथा वोट की राजनीति सबसे अधिक जिम्मेवार है।

सन्दर्भ

1. डॉ० सिंहल एस० सी०, भारतीय शासन एवं राजनीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
2. सिंह एम० पी०, राय हिमांशु, इंडियन पॉलिटिक्स सिस्टम, मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

3. यादव जे० एन० सिंह 'हरियाणा स्टडी ऑफ़ हिस्ट्री एण्ड पॉलिटिक्स प्रकाशन मनोहर', गुरुग्राम 1976
4. कश्यप सुभाष, 'गठबन्धन की सरकार और भारत में राजनीति', प्रकाशन एन० बी०डी०टी०, नई दिल्ली, 1997
5. डॉ० आजाद आनन्द, भारतीय राजनीति में धर्म की भूमिका–2, शोध पत्र
6. भारतीय राजनीति में धर्म की भूमिका, पत्रिका जून 08, 2021